E

SCR 745

ANNUAL EXAMINATION MODEL QUESTION MARCH 2020 - 21

STD. X **Third Language**

Time : 90 minutes **HINDI** **Total Score : 40**

सामान्य निर्देश :

- पहला बीस मिनट कूल ऑफ़ टाईम है ।
- इस समय प्रश्नों का वाचन करें और उत्तर लिखने की तैयारी करें ।

Score

भाग – 1 किन्हीं एक सूचना के प्रश्नों के उत्तर लिखें ।

(क) सूचना : ' बीरबहूटी ' कहानी का यह अंश पढें और प्रश्न 1 से 3 तक के उत्तर लिखें ।

पाँचवीं कक्षा का रिज़ल्ट आ गया । दोनों छठी में आ गए । यह स्कूल पाँचवीं तक ही था । " साहिल अब तुम कहाँ पढोगे ?" बेला ने पूछा । " और तुम कहाँ पढोगी बेला ?" साहिल ने पूछा । " मेरे पापा कह रहे थे कि तुझे राजकीय कन्या पाठशाला में पढाएँगे और तुम ? " " मुझे अगले साल अजमेर भेज देंगे । वहाँ एक हॉस्टल है, घर से दूर वहाँ अकेला रहूँगा ।"

1. साहिल अगले साल फुलेरा के स्कूल में नहीं पढेगा । क्यों ? 1
   (क) स्कूल में छठी से केवल लडकियों को भर्ती कराएगा । (ख) स्कूल पाँचवीं तक ही था ।
   (ग) साहिल के पापा उसे दूर भेजकर पढाना चाहते हैं । (घ) साहिल होस्टल में रहकर पढना चाहता है ।

2. **नमूने के अनुसार वाक्य बदलकर लिखें ।** 1

   साहिल छठी में आ जाता है । साहिल छठी में आ जाएगा ।
   बेला छठी में आ जाती है । बेला छठी में -------------- ।

3. रिज़ल्ट जानने के बाद बेला उस दिन की घटनाओं के बारे में अपनी सहेली के नाम पत्र लिखती है । वह **पत्र** लिखें । 4

   अथवा

   बेला अब राजकीय कन्या पाठशाला में पढती है । नए स्कूल के प्रथम दिन बेला अपनी डायरी लिखती है । **बेला की** वह **डायरी** कल्पना करके लिखें ।

(ख) सूचना : ' आई एम कलाम के बहाने ' फिल्मी लेख का यह अंश पढें और प्रश्न 1 से 3 तक के उत्तर लिखें ।

मोरपाल की मेरे खाने के डिब्बे में राजमा देखते ही बाँछें खिल जाती थीं । हमारा सौदा था खेल घंटी में खाने की अदला – बदली का । यानी मेरे टिफिन के राजमा–चावल उसके और उसके घर से आया बडा–सा छाछ का डिब्बा मेरा । उसे पता था कि छाछ मेरी कमज़ोरी है । मोरपाल ने मेरे टिफिन बॉक्स में रखे राजमा को खाने से पहले कभी राजमा देखा भी नहीं था । वह हमारे स्कूल के पंद्रह किलोमीटर दूर के किसी गाँव से साईकिल चलाता रोज़ स्कूल आता था।

1. ' मोरपाल ने पहले कभी राजमा देखा भी नहीं था ।' – कारण क्या होगा ? 1
   (क) मोरपाल की अरुचि (ख) मोरपाल की गरीबी (ग) मोरपाल की संपन्नता (घ) खेता का अभाव

2. **नमूने के अनुसार वाक्य बदलकर लिखें ।** 1

   मैं ऊँट पर चढता हूँ । मुझे ऊँट पर चढना आता है ।
   तुम घोडे से उतरते हो । ---------------- ।

3. कहानी के प्रस्तुत अंश के आधार पर **पटकथा** का एक दृश्य तैयार करें। 4

   अथवा

   मिहिर और मोरपाल की दोस्ती के बारे में **टिप्पणी** लिखें ।

SREEJITH K, KOVOOR VARKALA, SCRTUS Mob 9961224545

भाग – 2 किन्हीं एक सूचना के प्रश्नों के उत्तर लिखें ।

(क) सूचना : 'आई एम कलाम के बहाने ' फिल्मी लेख का यह अंश पढें और प्रश्न 4 से 6 तक के उत्तर लिखें ।

इस बीच राणा सा के कारिंदे कलाम के घर तलाशी लेने आते हैं और वहाँ कुँवर रणविजय की चीज़ों को पा कलाम पर चोरी का आरोप लगाते हैं । लेकिन कलाम फिर कलाम है । इस झूठे आरोप के सामने भी अपनी दोस्ती का प्रण नहीं तोडता । यह जानकर कि राणा कुँवर को उससे की दोस्ती की सज़ा देंगे, वह चोरी का इल्ज़ाम सह जाता है पर उन्हें अपनी दोस्ती के बारे में नहीं बताता । यहीं वह तय करता है कि वह अपनी चिट्ठी सीधे अपने हमनाम डॉ कलाम को दिल्ली जाकर खुद देगा । और वह अकेला ही निकल पडता है । रास्ते में मुश्किलें हैं । लेकिन कथा के अंत में कलाम को अपनी मंज़िल मिलती है ।

4. ' छोटू को अपनी मंज़िल मिलती है ।'- उसकी मंज़िल क्या है ? 1

5. छोटू ने रणविजय की दोस्ती के बारे में राणा के कारिंदे से नहीं बताया । क्यों ? 2

6. आई एम कलाम फिल्म में छोटू उर्फ कलाम का सपना साकार होता है । इस के आधार पर **समाचार** तैयार करें । 4

अथवा

अपने पत्र में छोटू ने क्या-क्या बताए होंगे ? डॉ कलाम के नाम छोटू का **पत्र** कल्पना करके लिखें ।

(ख) सूचना : ' दिशाहीन दिशा ' यात्रावृत्त का यह अंश पढें और प्रश्न 4 से 6 तक के उत्तर लिखें ।

वहाँ आकर अविनाश के मन में न जाने क्या भावुकता आई कि उसने एक नज़र पानी पर डाली, एक दूर के किनारों पर, और पूर्ण चाहनेवाले कलाकार की तरह कहा कि कितना अच्छा होता अगर इस वक्त इसमें से कोई कुछ गा सकता । " मैं गा तो नहीं सकता, हुज़ूर "– बूढा मल्लाह हाथ जोडकर बोला । " मगर आप चाहें तो चंद गज़लें तरन्नुम के साथ अर्ज कर सकता हूँ, और माशा अल्लाह चुस्त गज़लें हैं । "" ज़रूर ज़रूर ! " हमने उत्साह के साथ उसके प्रस्ताव का स्वागत किया । बूढे मल्लाह ने एक गज़ल छेड़ दी । उसका गला काफी अच्छा था और सुनाने का अंदाज़ भी शायराना था । काफी देर चप्पुओं को छोडे वह झूम – झूमकर गज़लें सुनाता रहा ।

4. **' गला काफी अच्छा था '** का मतलब क्या है ? 1

(क) आवाज़ मीठी थी । (ख) आवाज़ फुसफुसी थी ।

(ग) आवाज़ खराब थी । (घ) आवाज़ कमज़ोर थी ।

5. **कोष्ठक के उचित शब्द सही स्थान पर रखकर पिरामिड की पूर्ति करें ।** 2

- गज़ल छेड दी । (चुस्त, बूढे)
- मल्लाह ने गज़ल छेड दी ।
- -------------—-|
- -------------—-|

6. प्रस्तुत प्रसंग के आधार पर **पटकथा** का एक दृश्य तैयार करें । 4

अथवा

बूढे मल्लाह **' अब्दुल जब्बार '** की चरित्रगत विशेषताओं पर **टिप्पणी** लिखें ।

* मेहनती * सादा जीवन बितानेवाला * अच्छा गज़ल गायक

* खुश मिज़ाज़ * विनयशील * गरीब

SREEJITH P. KOVOOR VARKALA 9567224545

भाग – 3 किन्हीं एक सूचना के प्रश्नों के उत्तर लिखें ।

(क) सूचना : ' गुठली तो पराई है ' कहानी का यह अंश पढें और प्रश्न 7 से 9 तक के उत्तर लिखें ।

तभी भैया आ गया, " गुठलिया अपने नानू को खाना नहीं दिया ?" " देखो भाई साहब, आप कुल दीपक हो, यह घर, यह बगीचा और यह नानू सब आपका ही है, तो बेहतर होगा आप ही इन सबकी देखभाल करें ... और वैसे भी मैं तो पराई अमानत हूँ । " सब मुँह बाए गुठली को देखते रहे और गुठली टिफ़िन–बैग उठाकर स्कूल केलिए चल दी ।

7. **सही वाक्य चुनकर लिखें ।** 1

(क) गुठली उदास हुआ करता है । (ख) गुठली उदास हुई करती है ।
(ग) गुठली उदास हुई करता है । (घ) गुठली उदास हुआ करती है ।

8. घरवाले सब मुँह बाए गुठली को देखते रहने के कारण क्या–क्या होंगे ? 2

9. प्रस्तुत अंश के आधार पर गुठली उस दिन की डायरी लिखती है । वह **डायरी** कल्पना करके लिखें । 4

अथवा

' लडकी ने दिया घरवालों को करारा सबक ' - शीर्षक पर समाचार पत्रों में एक रपट आया । वह **रपट** तैयार करें ।

(ख) सूचना : ' बीरबहूटी ' कहानी का यह अंश पढें और प्रश्न 7 से 9 तक के उत्तर लिखें ।

गणित के माटसाब सुरेंदर जी का पीरियड खेल घंटी के बाद आता था । बच्चे उनसे काँपते थे और खेल घंटी बंद होने से दो मिनट पहले ही अपनी–अपनी जगहों पर आकर बैठ जाते थे । एक दिन सुरेंदर जी माटसाब ने बेला के बालों में पंजा फँसाया । पर शायद जिस गलती को पाकर वे उसके बाल पकडकर फेंकनेवाले थे, वह गलती ही नहीं। उन्होंने बेला को छोड दिया।

7. खेल घंटी बंद होने से दो मिनट पहले ही बच्चे अपनी–अपनी जगहों पर आकर बैठ जाते थे। क्यों ? 1

(क) उनको कॉपी लिखना था। (ख) खेल घंटी के बाद खाना मिलता था।
(ग) खेल घंटी के बाद का पीरियड सुरेंदर माटसाब का था। (घ) उनको गृहकार्य पूरा करना था।

8. बेला खुद को शर्मिंदा महसूस कर रही थी। इसके क्या–क्या कारण हैं ? 2

9. **आशय समझकर सही मिलान करें ।** 4

ज़रा-सी गलती पर माटसाब	बच्चे अपनी-अपनी जगहों पर आकर बैठ जाते थे ।
सुरेंदर जी का पीरियड	बच्चों को इधर-उधर फेंक देते थे ।
खेल घंटी बंद होने से दो मिनट पहले	रुकना भूल जाता था ।
उनका हाथ चलना शुरू होता तो	खेल घंटी के बाद आता था ।

भाग – 4 किन्हीं एक सूचना के प्रश्नों के उत्तर लिखें ।

(क) सूचना : ' हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था ' टिप्पणी का यह अंश पढें और प्रश्न 10 से 11 तक के उत्तर लिखें ।

" व्यक्ति को नहीं जानता था, हताशा को जानता था " कहते ही वे " जानने " की हमारी उस जानी–पहचानी रूढी को तोड देते हैं जो व्यक्ति के नाम, पते, उम्र, ओहदे या जाति से जानने को जोडती है । यदि हम किसी व्यक्ति को उसकी हताशा, निराशा, असहायता या उसके संकट से नहीं जानते तो हम कुछ नहीं जानते । सडक पर घायल पडे अपरिचित व्यक्ति को देखकर क्या हम कह सकते हैं कि उसे हम नहीं जानते ? वास्तव में हम जानते हैं कि यह व्यक्ति मुसीबत में है और इसे हमारी मदद की ज़रूरत है । यह कविता मनुष्य को मनुष्य की तरह " जानने " की याद दिलाती है ।

10. हमें किन-किन व्यक्तियों की मदद करनी चाहिए ? 1

11. **' जीवन में मानवीय मूल्य का महत्व '**- विषय पर **लघु लेख** लिखें। 4

* जीवन की समस्याएँ
* दूसरों की मदद
* परस्पर सहायता करना
* त्याग का मनोभाव

(ख) सूचना : ' हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था ' कविता की पंक्तियाँ पढें और प्रश्न 10 से 11 तक के उत्तर लिखें ।

हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था
व्यक्ति को मैं नहीं जानता था
हताशा को जानता था
इसलिए मैं उस व्यक्ति के पास गया
मैं ने हाथ बढाया
मेरा हाथ पकडकर वह खडा हुआ

10. **' हाथ बढाना '**- का अर्थ क्या है ? 1

(क) सहायता करना (ख) हाथ ऊपर उठाना (ग) प्यार करना (घ) हाथ पीछे उठाना

11. कवि और कविता का परिचय देते हुए इन पंक्तियों का **आशय** लिखें। 4

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRIUS pk 9567024545

भाग – 5   किन्हीं एक सूचना के प्रश्नों के उत्तर लिखें ।

(क) सूचना : ‘ आई एम कलाम के बहाने ’ फिल्मी लेख का यह अंश पढें और प्रश्न 12 से 14 तक के उत्तर लिखें ।

मैं स्कूल की नीली –खाकी यूनीफॉर्म से हमेशा चिढा करता और उसे पहनना हमेशा टाला करता । वहीं मोरपाल मुझे जब भी दिखा, हमेशा वही स्कूल की यूनीफॉर्म पहने ही दिखा । एक बार तो मुझे याद है कि मोहल्ले की किसी शादी में भी उसे वही नीली–खाकी स्कूल यूनीफॉर्म पहने देख मैं हैरान रह गया था । यह मुझे बहुत बाद में समझ आया कि जिस स्कूल में बिताए समय को मैं अपने बचपन का सबसे खराब समय समझा करता था, शायद वही मोरपाल के लिए उसके जीवन का सबसे अच्छा समय होता था । घर की कमरतोड़ मेहनत और खेत–मजूरी से इतर दिन का ऐसा एकमात्र समय जब वह बच्चा बना रह सकता था । मेरे लिए स्कूल स्कूल यूनीफॉर्म बोझ थी । मेरे पास उससे बेहतर कपडे थे जिन्हें मैंने अपनी पसंद से बडे शहरों के बडे बाज़ारों से खरीदा था । लेकिन मोरपाल के पास एकमात्र कमीज़–पैंट का नया जोडा वह नीली–खाकी स्कूल यूनीफॉर्म ही थी । मोरपाल का स्कूल आठवीं के बाद छूट जाता है (छुटवा दिया जाता है) और वह अपने पिता की तरह आज भी वहीं खेत-मजूरी करता है ।

12. **सही विकल्प चुनकर लिखें ।** 1

(क) कौन + का = किसीका (ख) कोई + का = किसीका (ग) किस + का = किसीका (घ) किसी + का = किसीका

13. मोरपाल शादी में भी स्कूली यूनीफॉर्म पहनकर क्यों आता था ? 1

(क) लेखक ने उससे यूनीफॉर्म पहनकर आने को कहा था । (ख) उसे यूनीफॉर्म पहनना बहुत पसंद था ।
(ग) उसके पास का एकमात्र नया जोडा वही स्कूली यूनीफॉर्म था । (घ) शादी में प्रधानाध्यापक भी आनेवाले थे ।

14. मोरपाल का स्कूल आठवीं कक्षा के बाद छूट जाता है । इस के बारे में मिहिर और मोरपाल के बीच बातें हो रहे हैं ।
- इस प्रसंग पर **वार्तालाप** तैयार करें । 4

अथवा

मोरपाल की पढाई आठवीं कक्षा के बाद छूट जाता है । इसपर मिहिर बहुत दुखी है । इसके आधार पर अपने मित्र के नाम मिहिर पत्र लिखते हैं । **मिहिर का** वह **पत्र** कल्पना करके तैयार करें ।

(ख) सूचना : ‘ सबसे बडा शो मैन ’ जीवनी का यह अंश पढें और प्रश्न 12 से 14 तक के उत्तर लिखें ।

चार्ली को वह अकसर अपने साथ थिएटर ले जाती थी । उस दिन भी परदे के पीछे खडा वह आवाज़ के तमाशे को देख रहा था । माँ और मैनेजर में बहस होते देख वह वहाँ गया । मैनेजर ने चार्ली को माँ के कुछ दोस्तों के सामने अभिनय करते देखा था और वह उसे स्टेज पर भेजने की ज़िद करने लगा । माँ डर गई । पाँच साल का बच्चा इस उग्र भीड को झेल पाएगा ! बहुत मुबाहिसा के बाद वह अंतत: चार्ली को स्टेज पर ले गया और बचाव के कुछ शब्द कह उसे अकेला छोड आया । धुएँ के उडते हुए छल्लों के बीच चार्ली ने मशहूर गीत जैक जोन्स गाना शुरू किया । कुछ देर तक आर्केस्ट्रा वाले उसकी आवाज़ में उस गाने की धुन तलाशते रहे और वह जैसे ही मिली, गाना सजने लगा ।

12. चार्ली परदे के पीछे खडा आवाज़ के तमाशे को देख रहा था । - यहाँ तमाशा क्या थी ? 1

13. कुछ देर तक आर्केस्ट्रा वाले उसकी आवाज़ में उस गाने की धुन तलाशते रहे । क्यों ? 1

14. मैनेजर के साथ हुए बहस के बाद माँ चार्ली से स्टेज पर जाने की अनुरोध करती है । इस प्रसंग का **वार्तालाप** तैयार करें । 4

अथवा

फरवरी 14 को शाम 6 बजे से 8 बजे तक लंदन के ओल्डरशॉट थिएडर में मशहूर गायिका हेन्ना जी का **म्यूज़िक प्रोग्राम** आयोजित किया है । इसकेलिए **पोस्टर** तैयार करें ।

भाग – 6 किन्हीं एक सूचना के प्रश्नों के उत्तर लिखें ।

(क) सूचना : ' अकाल और उसके बाद ' कविता की पंक्तियाँ पढें और प्रश्न 15 से 16 तक के उत्तर लिखें ।

दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद
धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद
चमक उठीं घर भर की आँखें कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद ।

15. यहाँ किस हालत का चित्रण है ? 1

(क) अकाल का (ख) अकाल के पहले का (ग) अकाल के बाद का (घ) अकाल की संभावना का

16. कवि और कविता का परिचय देते हुए इन पंक्तियों का **आशय** लिखें । 4

अथवा

' दाना नहीं है तो खाना नहीं '– **भोजन का दुर्व्यय के विरुद्ध** एक **पोस्टर** तैयार करें ।

(क) सूचना : ' टूटा पहिया ' कविता की पंक्तियाँ पढें और प्रश्न 15 से 16 तक के उत्तर लिखें ।

तब मैं
रथ का टूटा हुआ पहिया
उसके हाथ में
ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ !

15. इस कविता में **' टूटा पहिया '** किसका प्रतिनिधित्व करता है ? 1

(क) सामान्य मानव (ख) महा मानव (ग) विश्व मानव (घ) धनी मानव

16. इन पंक्तियों की प्रासंगिकता पर **टिप्पणी** लिखें । 4

अथवा

संबंध पहचानें, सही मिलान करके लिखें ।

रथ का टूटा हुआ पहिया	दुस्साहसी अभिमन्यु आकर घिर जाए ।
इतिहासों की गति झूठी पडने पर	ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ ।
अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ	ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहें ।
अकेली निहत्थी आवाज़ को	सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय ले ।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRHS ph 9567224545

भाग – 7 किन्हीं एक सूचना के प्रश्नों के उत्तर लिखें ।

(क) सूचना : ' बीरबहूटी ' कहानी का यह अंश पढें और प्रश्न 17 से 19 तक के उत्तर लिखें ।

बादल बहुत बरस लिए थे । फिर भी बहुत सारा पानी उनमें बचा हुआ था । वे खेतों, जंगलों के ऊपर छाए हुए थे । सारा आकाश मेघों से भरा था । मेघों की छायाओं में गीली हवाएँ इधर-उधर घूम रही थीं ।

17. **' बहुत सारा पानी बादलों में बचा हुआ था '**– इसका मतलब क्या है ? 1

(क) वर्षा समाप्त हो गई ।
(ख) आगे भी वर्षा होगी ।
(ग) वर्षा की कोई संभावना नहीं थी ।
(घ) वर्षा कहीं चली गई ।

18. **सही वाक्य चुनकर लिखें ।** 1

(क) हवाएँ इधर-उधर घूमेगा ।
(ख) हवाएँ इधर-उधर घूमेंगे ।
(ग) हवाएँ इधर-उधर घूमेगी ।
(घ) हवाएँ इधर-उधर घूमेंगी ।

19. **कोष्ठक के उचित शब्द सही स्थान पर रखकर पिरामिड की पूर्ति करें ।** 2

(पानी की, लंबे-पतले)

- बूँदें अटकी हुई थीं ।
- बाजरे के पातों में बूँदें अटकी हुई थीं ।
- ----------------।
- --------------------------- ।

(ख) सूचना : ' बसंत मेरे गाँव का ' लेख का यह अंश पढें और प्रश्न 17 से 19 तक के उत्तर लिखें ।

देर शाम तक बच्चे फूल चुनते हैं । इन फूलों को रिंगाल से बनी खास तरह की टोकरियों में रखा जाता है । टोकरियों को रात भर पानी से भरी गागरों के ऊपर रखा जाता है ताकि वे सुबह तक मुरझा न पाएँ । सुबह पौ फटते ही बच्चों की टोलियाँ गाँव भर में घूमती हैं । पिछली शाम चुने गए फूल घरों की देहरियों पर सजाए जाते हैं ।

17. फूल न मुरझाएँ ; इसकेलिए बच्चा क्या करते हैं ? 1

18. **नमूने के अनुसार वाक्य की पूर्ति करें ।** 1

बच्चा मीठी आवाज़ बजाता है । बच्चे से मीठी आवाज़ बजायी जाती है ।
लडका नया घर सजाता है । लडके से नया घर----------- ।

19. उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में फूलदेई को बच्चों को सबसे बडा त्यौहार मानते हैं । क्यों ? 2

SREENITH P. KOVOOR VARKALA, SORTES ph 9567224545

उत्तर सूचिका – CODE E

भाग – 1

(क) 1. स्कूल पाँचवीं तक ही था।

2. आ जाएगी।

3. **बेला का पत्र – रिज़ल्ट के बाद**

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय सहेली,

तुम कैसी हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ ठीक हूँ। तुम्हारी कोई खबर नहीं कुछ दिनों से, एक खास बात बताने केलिए मैं यह पत्र भेज रही हूँ।

आज पाँचवीं के रिज़ल्ट का दिन था। मैं और साहिल हम दोनों पास हो गए। मैं बहुत खुश हूँ ... साथ-साथ दुखी भी। क्योंकि मैं कल से बेला से मिल नहीं पाएगी। अगले साल वह राजकीय कन्या पाठशाला में पढेगा। घरवाले मुझे अजमेर भेज देंगे। घर से दूर एक होस्टल में अकेला रहकर पढना पडेगा। आज तक कितनी खुशी थी। बारिश के मौसम में साहिल के साथ बीरबहूटियों को खोजकर कितने दिन बिताए। कल से किसके साथ लंगडी टाँग खेलूँ ? क्या वह मुझे याद रखेगी ? मेरा रिपोर्ट कार्ड देखते समय उसकी आँखों में आँसू आ गए। मेरा विश्वास है कि वह भी दुखी है। क्योंकि हमारी दोस्ती उतनी सख्त थी। नए स्कूल में मुझे मित्र ज़रूर मिलेंगे ... पर बेला जैसे कोई नहीं होगी।

वहाँ तुम्हारी पढाई कैसे हो रही है ? तुम कब यहाँ आओगी ? परिवारवालों से मेरा प्रणाम कहना। जवाब पत्र की प्रतीक्षा से,

सेवा में,
नाम
पता।

तुम्हारी सहेली
(हस्ताक्षर)
नाम

अथवा

बेला की डायरी (नए स्कूल के पहले दिवस की)

तारीख : ....

मैं बहुत उदास हूँ। आज साहिल के बिना स्कूल का पहला दिवस था। आज से हम अलग-अलग स्कूल में हैं। स्कूल में नए दोस्तों को मिला। लेकिन साहिल के सामने ये कहाँ ? साहिल ही मेरा सच्चा दोस्त है। मैं सदा हमारी दोस्ती के बारे में सोचती हूँ। मैं फिर कब साहिल से मिलूँगी ? हम कब बीरबहूटियों को ढूँढेंगे? हम कब एकसाथ खेलेंगे? इन विचारों से पढने को भी मन नहीं लगता है। सुरेंदरजी हमें पीट लेते तो भी कोई परवाह नहीं था। आज ही साहिल को एक पत्र लिखना है। साहिल भी वहाँ दुखी होगा। मेरा पत्र उसको आश्वासन देगा। मैं अगली छुट्टियों की प्रतीक्षा में हूँ।

(ख) 1. मोरपाल की गरीबी

2. तुम्हें घोडे से उतरना आता है।

3. **पटकथा (खाने की अदला बदली के बारे में)**

स्थान - स्कूल के कमरे में।
समय - दोपहर के 1 बजे।
पात्र - 1. मिहिर, 11 साल का लडका, नीली-खाकी यूनीफॉर्म पहना है।
2. मोरपाल, 11 साल का लडका, नीली-खाकी यूनीफॉर्म पहना है।
घटना का विवरण - खेल घंटी के समय दोनों खाना खाने लगते हैं। दोनों आपस में बातें करते हैं।

संवाद -

मोरपाल - अरे मिहिर, जल्दी आओ हम साथ खाएँ।
लेखक - पुस्तक बैक में रखकर मैं अभी आया।
मोरपाल - वाह ! तुम्हारे टिफिन बॉक्स में यह क्या है ?
लेखक - यह तो राजमा है। क्या तुमने इसे अभी तक खाया नहीं ?
मोरपाल - नहीं यार। मैं इसे आज पहली बार देख रहा हूँ।
लेखक - मेरेलिए सामान्य सी चीज़ तुम्हारेलिए इतना खास ! खाकर कहिए कैसा है राजमा-चावल ? तुमने आज क्या लाया ?
मोरपाल - मैं तो छाछ लाया हूँ।
लेखक - वाह छाछ ! इसे खाए कितने दिन हुए ?
मोरपाल - तुम्हारे चावल और राजमा की कडी बहुत स्वादिष्ट है।
लेखक - तुम्हारे सब्जी-चावल और छाछ भी बहुत बढिया है।
मोरपाल - सच ! तो हम एक काम करें, आज से हर दिन खाना अदला-बदली करके खाएँ।
लेखक - ज़रूर। आज से मेरे घर से लाते राजमा-चावल तुम खाओगे और तुम्हारे घर से लाते छाछ-चावल मैं।
मोरपाल - सचमुच यह तो बडी खुशी की बात है। खेलने जाना है न ? जल्दी खाएँ।
लेखक - ठीक है।

(दोनों खाने की अदला-बदली करके खाते हैं।)

अथवा

टिप्पणी – मोरपाल और मिहिर की दोस्ती

बचपन में मोरपाल और मिहिर अच्छे दोस्त थे। गाँव के स्कूल में दोनों एक साथ पढते थे। क्लास की दरीपट्टी पर नाम का पहला अक्षर मिलने से दोनों की बैठने की जगहें साथ थीं। खेल घंटी में दोनों खाना अदला-बदली करके खाते थे। मोरपाल अपने घर से छाछ लाकर मिहिर को देता था और मिहिर अपने घर से राजमा-चावल लाकर मोरपाल को देता था। दोनों आपस में बहुत प्यार करते थे। पढाई में वे एक दूसरे की सहायता भी करते थे। दोनों अपनी दोस्ती को बनाये रखने की कोशिश भी करता था। उनकी दोस्ती के बीच अमीरी-गरीबी की कोई भेदभाव नहीं था।

भाग – 2

(क) 4. स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालों वाले राष्ट्रपति कलाम जैसा बनना।

5. छोटू और रणविजय की दोस्ती के कारण रणविजय को दंड मिलेगा। इसी डर से छोटू ने उनकी दोस्ती के बारे में राणा के कारिंदे से नहीं बताया। यह भी नहीं कि छोटू, रणविजय की दोस्ती छूटना नहीं चाहता।

6. **समाचार (रपट) – ' आई एम कलाम ' नामक फिल्म में छोटू का सपना साकार होने के बारे में**

गरीब बालक का सपना पूरा हुआ

स्थान : ....चाय की दुकान में काम करनेवाला एक गरीब बालक का सपना पूरा हुआ। छोटू उर्फ़ कलाम का सपना था - स्कूल जाना और टीवी में देखे लंबे बालोंवाले राष्ट्रपति कलाम-सा बनना। स्कूल में पढाई करने के लिए उसको बडा शौक था। चाय की दूकान में काम करते समय विदेशी टूरिस्ट लूसी मैडम से परिचय हुआ, उन्होंने छोटू को दिल्ली ले जाने का वादा किया था। लेकिन छोटू अकेला ही दिल्ली गया। रास्ते में बहुत मुश्किलें हुईं। अंत में कलाम जी से मिला। कलाम जी ने छोटू की पढाई के लिए सहायता करने का वादा किया। छोटू कलाम जी से बहुत आभारी है।

अथवा

छोटू उर्फ कलाम ने राष्ट्रपति डॉ. कलाम को देने लिखा पत्र

जैसलमेर
06 जून 2019

आदरणीय राष्ट्रपति साहब,

नमस्कार। आप कैसे हैं ? आशा है आप वहाँ कुशल से हैं। मैं आपसे अपनी मंज़िल बताना चाहता हूँ। मैंने अपनी चिट्ठी में थोडी लिखी है, पर बहुत समझना। चिट्ठी को तार समझकर जल्दी जवाब देना।

मैं ढाणी के एक थडी में काम करनेवाला एक बच्चा हूँ , जिसकी जिंदगी आपने बदल दी । मेरा नाम छोटू है ,लेकिन मैं अपने को कलाम मानता हूँ। मुझे छोटू अच्छा नहीं लगता। टीवी में आपका भाषण सुना। कितना अच्छा था। मैं समझता हूँ कि हर बच्चा लाल बहादुर शास्त्री बन सकता है और राष्ट्रपति कलाम भी बन सकता है। मैं आप जैसे बनना चाहता हूँ। लेकिन मैं बडा गरीब हूँ। मुझे स्कूल जाने की इच्छा है, मेरे मित्र रणविजय के साथ। लूसी मैडम ने आपसे मिलवाने का वादा किया था।

मुझे आपसे बहुत -सी बातें करनी हैं । मालूम है आपको बच्चे बहुत पसंद हैं । पढ-लिखकर मुझे आपके जैसा होना है । इसलिए कृपया आप मेरी मदद कीजिए। बस इतना ही कहना है और हाँ ... धन्यवाद भी बोलना है।

आपका आज्ञाकारी छात्र
कलाम (छोटू)

सेवा में
डॉ. अब्दुल कलाम
राष्ट्रपति
दिल्ली

(ख) 4. आवाज़ मीठी थी।

5. **बूढे** मल्लाह ने गज़ल छेड दी।
बूढे मल्लाह ने **चुस्त** गज़ल छेड दी।

6. **पटकथा - नाव में ताल यात्रा करना**

स्थान – भोपाल ताल के एक नाव।

समय – रात के साढे गयारह बजे।

पात्र – लेखक, अविनाश और मल्लाह।

(लेखक और अविनाश 50 साल के कुर्ता और पतलून पहने हैं। मल्लाह 60 साल के, सिर्फ एक तहमद पहना है।)

घटना का विवरण – लेखक और अविनाश नाव में लेटे ताल की सवारी करने लगते हैं। तब लेखक मल्लाह से कुछ पूछने लगता है।

संवाद –

लेखक – आधी रात को बुलाने से आपको कोई तकलीफ हुई है क्या ?

मल्लाह – क्या तकलीफ है साब ? यही तो हमारा गुज़ारा है न ?

लेखक – आपका नाम क्या है ?

मल्लाह – जी, मेरा नाम अब्दुल जब्बार है।

लेखक – क्या आप इस ताल के पास ही रहते हो ?

मल्लाह – हाँ साब। मैं यहाँ पास ही रहता हूँ।

लेखक – सुना है, आप जैसे मल्लाह अच्छे गायक भी हैं। क्या आप हमारेलिए एक गाना गाएँगे ?

मल्लाह – मैं गा तो नहीं सकता, हुज़ूर।

लेखक – कोशिश तो करो यार। देखो कितना अच्छा नज़ारा है यह ! इस वक्त एक गाना भी हो तो मज़ा आता।

मल्लाह – आप चाहें तो चंद गज़लें तरन्नुम के साथ अर्ज कर सकता हूँ, माशा अल्लाह चुस्त गज़लें हैं।

लेखक – ज़रूर ज़रूर ! आपको जैसे आता है वैसा गाओ।

मल्लाह – ठीक है साब ।

(मल्लाह उनकेलिए गज़लें सुनाने लगता है ।)

अथवा

मल्लाह अब्दुल जब्बार की चरित्रगत विशेषताओं पर टिप्पणी

मोहन राकेश के यात्रावृत्त दिशाहीन दिशा का पात्र है अब्दुल जब्बार नाम का एक बूढा मल्लाह । वह गरीब , परिश्रमी और सादा जीवन बितानेवाला व्यक्ति था । लेखक के मित्र का अनुरोध मानकर रात के ग्यारह बजे के बाद वह नाव लेकर आया । आधी रात के समय कडी सर्दी में वह केवल एक तहमद पहनकर नाव चलाया । उस शांत वातावरण में लेखक का मित्र गाना सुनना चाहे तो उसने नाव चलाते हुए एक के बाद एक करके अच्छे गज़लें गाए । वह बडा विनयशील था । उसका स्वर काफी अच्छा था और सुनाने का अंदाज़ भी शायराना था । उसकी दाढी और छाती के सारे बाल सफेद हो चुके थे । बूढा होने पर भी पतवार चलाते समय उसकी मांसपेशियाँ इस तरह हिलती थीं जैसे उनमें फौलाद भरा हो । उसके गायन ने लेखक और मित्र के सैर को यादगार बना दिया ।

भाग – 3

(क) 7. गुठली उदास हुआ करती है ।

8. घरवालों के गुठली को पराए घर की अमानत बताने के बदले उसने अपने को मेहमान कहते हुए घर के काम करने से इनकार कर लेता है । लडके केलिए ही जन्मगृह अपना है और घर का देखभाल करना उसका कर्तव्य है । ऐसा कहते हुए गुठली टिफिन –बैग उठाकर स्कूल केलिए निकलने लगा तो घरवाले सब मुँह बाए उसको देखता रहा ।

9. **गुठली की डायरी (घरवालों को एक सबक सिखाने के प्रसंग)**

तारीख : ……………….

आज मैं बहुत खुश हूँ । मैंने आज अपने घरवालों को एक सबक सिखाया । यहाँ के लोग मुझे पराए घर की चीज़ समझती थी । अब समझ में आए होंगे । लडकियाँ केवल घर का काम काज निपटाने केलिए नहीं है । उनका भी अपना अस्तित्व है । क्या ज़माना है यह ? हम बहिनों को भी अपने भाइयों की तरह अपने घर में रहने का अधिकार ज़रूर है । इसलिए मैंने घरवालों केलिए एक गंभीर समस्या पेश करते हुए कहा, मैं इस घर का मेहमान हूँ और मुझसे काम करवाना उचित बात नहीं है । यह तो भइया का अपना घर है वही यहाँ का सारा काम करे । मेरी बातें सुनकर सब चकित हो गए । किसीके पास उत्तर नहीं था । मुझे विश्वास है,वे ज़रूर कुछ सोचेंगे । मैं यहाँ से शुरू करना चाहती हूँ । मैं पढूँगी और दिखाऊँगी कि लडकी भी लडके के समान कुछ कर सकती है । बहुत नींद आ रही है । बस, बाकी कल ।

अथवा

समाचार – गुठली की प्रतिक्रिया

घरवालों को लडकी ने दिया करारा सबक

स्थान : ------------- कल गुठली नामक की चौदह साल की लडकी की प्रतिक्रिया से पूरे घरवाले चकित रह गए । घरवाले उसको पराई अमानत मानती है । गुठली ने इसपर आवाज़ उठाई । वह जन्मगृह को पराया घर मानने को तैयार नहीं थी । ससुराल को अपना घर मानना उसको पसंद नहीं था । उसने घरवालों को समस्या पेश करते हुए ऐसा कहा, लडकी केलिए जन्मगृह पराया है तो लडके केलिए यानी भाई केलिए अपना घर होगा । गुठली घर के काम करना बंद करते हुए कहा, वह उस घर का मेहमान है, मेहमान से काम करवाना अच्छी बात नहीं है । भैया केलिए यह घर अपना है तो घर का सारा काम, घर का देखभाल सब वही करना उचित रहेगा । परिवार के अंदर हो रहे इस तरह के असमानता के विरुद्ध आवाज़ उठानेवाली गुठली जैसी लडकी बाकी लडकियों को एक उत्तम नमूना है । लडकियों को समाज में या परिवार में उचित सम्मान मिलने केलिए इस प्रकार का धैर्यपूर्वक व्यवहार करना ही होगा ।

(ख) 7. खेल घंटी के बाद का पीरियड सुरेंदर माटसाब का था ।

8. बेला जानती थी अपनी दिली दोस्त साहिल की नज़र में वह बहुत अच्छी लडकी है । उसके सामने बेला अपमानित होना नहीं चाहती थी । लेकिन माटसाब का व्यवहार साहिल की उपस्थिति में थी । इसलिए उसे शरम आया ।

9. **आशय समझकर सही मिलान करें ।**

ज़रा-सी गलती पर माटसाब	बच्चों को इधर-उधर फेंक देते थे ।
सुरेंदर जी का पीरियड	खेल घंटी के बाद आता था ।
खेल घंटी बंद होने से दो मिनट पहले	बच्चे अपनी-अपनी जगहों पर आकर बैठ जाते थे ।
उनका हाथ चलना शुरू होता तो	रुकना फूल जाता था ।

भाग – 4

(क) 10. हताश, असहाय और संकट में पडे

11. **टिप्पणी – जीवन में मानवीय मूल्य का महत्व**

हरेक व्यक्ति के जीवन में मूल्यों का अत्यधिक महत्व है । हमारा व्यक्तित्व और चरित्र हमारे द्वारा बनाए गए मूल्यों के आधार पर बनता है । अच्छे मूल्य हमें समाज में दूसरों की ज़रूरतों के प्रति मानवीय और संवेदनशील बनाते हैं । मूल्य मनुष्य को मनुष्य बनाते हैं , इसके बिना एक आदमी जानवर से कम नहीं होगा । जीवन की समस्याओं से बचने में मानवीय मूल्य आम जनता की मदद करती है । हमें दूसरों की परेशानियाँ जानकर उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए । जो विपत्ति के समय दूसरों की सहायता करता है , वही सच्चा मानव है । दूसरों की परेशानियों को हमें अपनी परेशानियाँ जैसा मानना चाहिए । हमें सहजीवियों के साथ करुणा एवं स्नेहपूर्ण व्यवहार करना चाहिए । दूसरों केलिए अपने जीवन तथा जीवन की सुविधाएँ तक त्यागनेवाले बहुत लोग आज भी हमारे ज़माने में रहते हैं । ऐसे लोग अमर बन जाते हैं । हम सब परस्पर सहायता करनेवाला हो तो समाज के हरेक प्यार –भरे जीवन बिता सकेंगे । संक्षेप में हम सभी को अच्छे मूल्यों को अपनाना चाहिए और आनेवाली पीढियों को भी इसका महत्व सिखाना चाहिए।

(ख) 10. सहायता करना

11. **कवितांश का आशय**

प्रस्तुत पंक्तियाँ समकालीन हिंदी साहित्य के विख्यात कवि श्री. विनोद कुमार शुक्ल की सुंदर कविता हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था से ली गई हैं। इस कविता में कवि जानना शब्द की हमारी जानी पहचानी रूढी को तोड देते हैं।

कवि कहते हैं कि सडक पर हताशा से बैठे एक अपरिचित व्यक्ति को देखते ही कवि उसकी समस्या को जल्दी पहचान लेते हैं। इसलिए उसकी सहायता करने केलिए उसकी ओर हाथ बढाते हैं। कवि के हाथ पकडकर वह खडा हुआ। कवि को वह नहीं जानता था, पर कवि के हाथ बढाने को जानता था। दोनों साथ-साथ चले। यानी कवि व्यक्ति को जानने के बदले उसकी समस्या को पहचाने। कवि का कहना है कि अकसर हम दूसरों को उनके नाम, पते, उम्र, ओहदे, जाति आदि के द्वारा जानते हैं। लेकिन असल में किसीको जानना है तो उसकी हताशा,निराशा, असहायता या संकट को जानना ही काफी होगा। किसीको व्यक्तिगत रूप से जानना और उसकी हताशा, दुख-दर्द, विवशता, समस्या, आवश्यकता आदि से जानना दोनों अलग है। मनुष्य की समस्या को पहचानने केलिए उसको वैयक्तिगत (व्यक्तिगत) रूप से जानने की ज़रूरत नहीं है। सडक पर घायल पडे व्यक्ति को देखना पडे तो हमें समझना चाहिए कि वह व्यक्ति मुसीबत में है और उसे हमारी मदद की आवश्यकता है। यहाँ कवि मनुष्य को मनुष्य की तरह जानने की याद दिलाती है। कविता का संदेश है कि मनुष्यों के बीच मानवीय संवेदना का होना अनिवार्य है, जानकारियाँ नहीं।

जानना शब्द को एक विशेष अर्थ प्रस्तुत करनेवाली इस कविता की प्रासंगिकता सार्वकालिक है। कविता में सरल भाषा का प्रयोग किया है। गद्य में लिखी हुई इस कविता में गीतात्मकता का बोध खूब मिलता है। यह कविता कोई लोकगीत जैसा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देती है। जानता था और नहीं जानता था का प्रयोग अधिक आकर्षक बना है।

भाग – 5

(क) 12. कोई + का = किसीका

13. उसके पास का एकमात्र नया जोडा वही स्कूली यूनीफॉर्म था।

14. **वार्तालाप – मिहिर और मोरपाल के बीच (मोरपाल स्कूल छूट देने की बात)**

मिहिर - नमस्ते मोरपाल।
मोरपाल - नमस्ते।
मिहिर - तुम क्यों उदासीन हो ? बताओ मुझसे। क्या बात है ?
मोरपाल - तुमसे छिपाने को कुछ नहीं है। कल से मैं स्कूल नहीं आऊँगा।
मिहिर - क्या ? तुमने क्या बताया ?
मोरपाल - ठीक ही कहा है मिहिर।
मिहिर - फिर तुम क्या करने जा रहे हो ?
मोरपाल - कल से पिताजी को खेती में सहायता करने जाऊँगा।
मिहिर - तुमको स्कूल आना बहुत पसंद है न ?
मोरपाल - पसंद है। लेकिन मैं मज़बूर हूँ।
मिहिर - मुझे स्कूल आना बहुत पसंद नहीं है। कल से तुम भी नहीं हो तो ...
मोरपाल - कोई बात नहीं ... अच्छी तरह पढो। हम फिर मिलेंगे।
मिहिर - ठीक है मोरपाल।

अथवा

मिहिर का पत्र (मोरपाल का स्कूल आठवीं के बाद छूट जाने के बारे में)

स्थान : ....

तारीख : ....

प्रिय मित्र,

तुम कैसे हो ? कुशल हो न ? मैं यहाँ कुशलता से हूँ। परीक्षा की तैयारी में होंगे ? एक खुशी की बात बताने केलिए यह पत्र लिखता हूँ।

मेरी कक्षा में एक मित्र है, उसका नाम मोरपाल है। सारे दिन मोरपाल मेरेलिए छाछ लाता है। बदले में मैंने उसको राजमा-चावल देता हूँ। आज मोरपाल ने मुझसे कहा कि वह कल से स्कूल नहीं आएगा। मैं यह सुनकर स्तब्ध रह गया। वह गरीब है तो भी पढने में होशियार है। मुझे तो स्कूल जाना पसंद नहीं है। मोरपाल कल से अपने पिता के साथ खेत-मजूरी करने जाएगा। मैं मोरपाल की दोस्ती के कारण ही स्कूल जाता था। कल से मैं कैसे स्कूल जाऊँ ? किससे दोस्ती करूँ ? मैं बहुत उदास हूँ।

तुम्हारी माताजी और पिताजी को मेरा प्रणाम। छोटे भाई को मेरा प्यार। तुम्हारी जवाब की प्रतीक्षा में,

तुम्हारा मित्र
(हस्ताक्षर)
नाम

सेवा में,
नाम
पता।

(ख) 12. चार्ली की माँ स्टेज पर गाना गाते समय उनकी आवाज़ फटकर फुसफुसाहट में बदल गई। लोग म्याऊँ- म्याऊँ की आवाज़ निकालने लगे। चार्ली को माँ का यह हाल तमाशा जैसे लगा।

13. पाँच साल का चार्ली मशहूर गीत जैक जोन्स गाना अपने तरीके से गाना लगा। इस कारण ऑर्केस्ट्रावाले असमंजस में पडे रहे, बाद में वे चार्ली के गाने की धुन के अनुसार गाना सजने लगे।

14. **वार्तालाप (माँ चार्ली से स्टेज पर जाने का अनुरोध करती है ।)**

माँ – चार्ली बेटा ... ।
चार्ली – क्या है माँ ?
माँ – बेटा ... यह देखो ... लोग चिल्ला रहे हैं ।
चार्ली – इसलिए क्या ?
माँ – तुम स्टेज पर आकर कुछ करों ... ।
चार्ली – मैं क्या करूँ ?
माँ – तुमने पिछले दिन मेरी सहेलियों के सामने गाना गाया है न ? वही यहाँ करों ... ।
चार्ली – वह आपकी सहेलियों के सामने है न ... ? वे मेरे परिचित हैं । लेकिन अपरिचित लोगों के सामने मैं कैसे गाऊँ ... ?
माँ – कुछ नहीं होगा बेटा ... जल्दी मेरे साथ आओ और मैं कहने के जैसे करो ।
चार्ली – ठीक है माँ ।

अथवा

पोस्टर – म्यूज़िक प्रोग्राम

मशहूर गायिका हेन्ना जी की
म्यूज़िक प्रोग्राम
आयोजन – एल. एम.ए क्लब, लंदन

तारीख - 14 फरवरी को
समय - शाम को 7 बजे से
स्थान - लंदन के ओल्डरशॉट थिएडर में

प्रवेश टिकट से :
सादा सीट – 50 रॉयल सीट – 100
गायिका के साथ एक रात बिताने अवसर न खोने दें
आइए ... मज़ा लूटिए ...
सबका स्वागत

भाग – 6

(क) 15. अकाल के बाद का

16. **कवितांश का आशय**

अकाल और उसके बाद कविता के प्रस्तुत अंश में कवि नागार्जुन ने अनेक बिंबों और प्रतीकों से सजाकर अकाल के बाद की खुशहाली का वर्णन किया है ।

अकाल के दिन बीत जाने से घर की हालत एकदम बदल गयी । घर में कई दिनों के बाद दाने अए । घरवालों ने चूल्हा जलाया और आँगन से ऊपर धुआँ उठने लगा । घर के अंदर के चूल्हा,चक्की जैसे निर्जीव वस्तुओं और सभी जीव जंतुओं की आँखें नए जीवन आने की खुशी में चमक उठीं । घर से खाने की बाकी चीज़ें बाहर फेंकने पर उसे चुगकर तेज़ी से उड जाने की तैयारी में कौए ने अपनी पाँखें खुजलाईं । अकाल के दिन खतम होने पर घर के अंदर दाना आने से मनुष्यों के साथ सभी जीव-जंतु संतुष्ट हो जाते हैं ।

यहाँ कई दिनों के बाद फिर सबके मन में आई खुशी का,घर की बदली हालत का वर्णन सरल शब्दों में किया है । अकाल के बाद की खुशहाली की ओर सबका ध्यान आकर्षित करनेवाली यह कविता की प्रासंगिकता सार्वकालिक है ।

अथवा

पोस्टर - भोजन का दुर्व्यय के विरुद्ध

" भोजन है जीवन, अन्न ही है भगवान ।"
1. खाने की बर्बादी न करें ...
बचे हुए भोजन का सदुपयोग करें ।
2. बचा हुआ अच्छा भोजन
ज़रूरतमंद तक पहुँचाएँ ।
3. भोजन का दुर्व्यय
सबसे बडा पाप है जीवन में ...
इसलिए जितनी हो भूख
उतना ही भोजन थाली में ।
विश्व भोजन दिवस – अक्तूबर 16

(ख) 15. सामान्य मानव

16. **कवितांश की प्रासंगिकता पर टिप्पणी लिखें ।**

हिन्दी के प्रसिद्ध कवि धर्मवीर भारती की छोटी कविता है टूटा पहिया । प्रस्तुत कविता में रथ का टूटा हुआ पहिया हमें बताता है कि उसे बेकार समझकर मत फेंकना । दुरूह चक्रव्यूह रचकर कुरुक्षेत्र की युद्ध भूमि में महीरथियों को लडने केलिए तैयार होते देखकर उन्हें चुनौती देता हुआ अभिमन्यु आगे आया । इसी प्रकार हो सकता है कि हमारे समाज में अमर्ध की अक्षौहिणी सेनाओं से लडने के लिए सच्चाई के मार्ग पर टलनेवाला कोई नौजवान आए । ज़रूरत के अवसर पर अभिमन्यु टूटे पहिये का सहारा लेता है । उसीप्रकार सच्चाई की स्थापना के लिए हमारे सामने जो भी चीज़ आएगी उसे बेकार मत समझना । आज के समाज के शोषित जन को शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाने का आह्वान भी इसमें है ।

SREEJITH R. KOVOOR VARKALA, SCRT45 ph 9567224545

अथवा

संबंध पहचानें, सही मिलान करके लिखें ।

रथ का टूटा हुआ पहिया	ब्रह्मास्त्रों से लोहा ले सकता हूँ। दुस्साहसी
इतिहासों की गति झूठी पडने पर	सच्चाई टूटे हुए पहियों का आश्रय ले।
अक्षौहिणी सेनाओं को चुनौती देता हुआ	अभिमन्यु आकर घिर जाए।
अकेली निहत्थी आवाज़ को	ब्रह्मास्त्रों से कुचल देना चाहें।

भाग – 7

(क) 17. आगे भी वर्षा होगी।

18. हवाएँ इधर-उधर घूमेंगी।

19. बाजरे के पातों में **पानी की** बूँदें अटकी हुई थीं ।

बाजरे के **लंबे-पतले** पातों में पानी की बूँदें अटकी हुई थीं ।

(ख) 17. फूलों को न मुरझाने रिंगाल से बनी टोकरियों में रखकर रात भर पानी से भरे गागरों के ऊँपर रखा जाता है।

18. सजाया जाता है।

19. फूलदेई त्यौहार से जुडे फूल चुनने से लेकर सामूहिक भोज बनाने तक के सारे काम बच्चे करते हैं। इस त्यौहार के आयोजन में बडों की भूमिका केवल सलाह देने तक सीमित रहती है। इसलिए फूलदेई को उत्तराखंड के हिमालयी अंचल में बच्चों के बडे त्यौहार मानते हैं।

SREEJITH R, KOVOOR VARKALA, SCRT45 ph 9562245